वैदिक समाज में स्त्रियों की स्थिति

(भाग- १)

SNKT2006 - संस्कृतवाङ्मये स्त्री-विमर्शः

एम० ए० द्वितीयसत्रम्

डॉ० विश्वेशवाग्मी

सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः

महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः, बिहारः

vishujnu@gmail.com

विषयक्रम

- आधुनिक भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति –
  - भारत में स्त्रियों की दशा : एक सर्वेक्षण
    - कन्या भ्रूण हत्या
    - बालविवाह
    - शिक्षा के अधिकार से वंचित
    - परिवार में स्त्री की दयनीय स्थिति
- वैदिक समाज में स्त्रियों की स्थिति -
  - कन्या के रूप में स्त्री –
  - विवाह संस्कार -
    - विवाह के योग्य आयु-
    - स्वयंवर विवाह-
    - विधवा विवाह-

आधुनिक भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति

किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा देखकर आसानी से ज्ञात की जा सकती है। इस दृष्टि से यदि भारतीय समाज का अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होता है कि समय के साथ-साथ भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति में अत्यधिक उतार चढाव रहा है-

- मानव सभ्यता ने पाषाण युग से परमाणु युग (वैज्ञानिक युग) का एवं चार्ल्स डार्विन के अनुसार- बन्दरों से आधुनिक महामानव तक का सफर सफलतापूर्वक तय किया है।
- स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् तथाकथित प्रगतिशील भारतीय समाज में नारियों ने कृषि से अन्तरिक्ष तक पुरुषों के समान स्थान प्राप्त किया है।
- स्वतन्त्र भारत में स्त्रियों ने राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री से लेकर अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर सशक्त नेतृत्व प्रदान किया किन्तु आज भी मौलिक अधिकारों से वंचित।
- कन्या भ्रूण हत्या, लैंगिक भेदभाव, यौन उत्पीडन, घरेलु हिंसा, दहेज हत्या, शोषण, बलात्कार, तिरस्कार की लम्बी शृङ्खला।

भारत में स्त्रियों की दशा : एक सर्वेक्षण

अमेरिका स्थित Thomson Reuters Foundation के द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, हिंसा, रोजगार आदि विषयों को आधार बनाकर 2011 में प्रस्तुत सर्वेक्षण के अनुसार विकसित और विकासशील देशों में भारत में स्त्रियों की दशा सबसे खराब।

2018 में तो इस फ़ाउन्डेशन द्वारा

"THE WORLD'S 10 MOST DANGEROUS COUNTRIES FOR WOMEN"

की सूची में भारत को पहले पायदान

THE WORLD'S 10 MOST DANGEROUS COUNTRIES FOR WOMEN

ABOUT THE POLL

Seven years ago a Thomson Reuters Foundation experts' survey found the five most dangerous countries for women were seen to be Afghanistan, Democratic Republic of Congo, Pakistan, India, and Somalia. This year we set out to see if the situation had changed. We wanted to find out whether more was being done to address the overall risks faced by women, and specifically regarding healthcare, access to economic resources, customary practices, sexual violence, non-sexual violence and human trafficking. We expanded our poll to the 10 most dangerous countries with some surprising results.

World leaders vowed three years ago to eliminate all forms of violence and discrimination against women and girls by 2030, allowing them to live freely and safely to participate equally in political, economic and public life. But despite this pledge it is estimated that one in three women globally experience physical or sexual violence during their lifetime. Child marriage is still rife, with almost 750 million women and girls married before their 18th birthday, resulting in teen pregnancies that can put their health at risk and limiting schooling and opportunities.

वैदिक समाज में स्त्रियों की स्थिति
(कन्या के रूप में स्त्री)

कतिपय बुद्धिजीवियों का मानना है कि वैदिक समाज पितृसत्तात्मक समाज था अतः पुत्री, पत्नी अथवा माता के रूप में स्त्री का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं था। इसके लिए उनका तर्क होता है कि वैदिक प्रार्थनाओं में सर्वत्र पुत्र की ही कामना की गई है। वस्तुतः यह स्थापना उचित नहीं है-

- ✓ वैदिक कोश निघण्टु के अनुसार अपत्य-वाची १५ शब्द इस प्रकार हैं-

  तुक्। तोकम्। तनयः। तोक्म। तक्म। शेषः। अप्नस्। गयः। जाः। अपत्यम्।
  युहः। सुनुः। नपात्। प्रजा। बीजम्। इति पञ्चदश अपत्यनामानि। निघण्टु- २/२

  अपत्य का अर्थ- सन्तान, जिसमें पुत्र और पुत्री दोनों सम्मिलित हैं।

- ✓ वेदों में सन्तान की सर्वाधिक प्रार्थनाएँ 'प्रजा' शब्द से हैं। प्रजा से पुत्र और पुत्री दोनों का ग्रहण –

  'सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा'। ऋग्वेद १/२३/२४

  'आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिः' । ऋ० १०/८५/४३

  'इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु'। ऋ० १४/१/५४

कन्या के रूप में स्त्री

- वेदों में कई स्थलों पर स्पष्ट रूप से कन्या (पुत्री) की भी कामना की गई है-

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट ॥ ऋ० १०/१५९/३

पुत्रीणा ता कुमारिणा विश्वमायुर्व्यश्नुतः ॥ ऋ० ८/३१/८

- ✓ यजुर्वेद की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रार्थना-

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । यजुर्वेद २२/२२

में जहाँ इच्छा व्यक्त की गई है कि हमारे राष्ट्र में विजयशील, सभ्य, वीर युवक पैदा हों, वहीं साथ ही बुद्धिमती नारियों (पुरंधिः योषा) के उत्पन्न होने की भी प्रार्थना है।

- ✓ एक अन्य स्थान पर खडाऊँ पहन कर खुटर खुटर करती सुशोभित कन्याओं की उपमा देता हुआ वेद कहता है-

आ कनीनकेव विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके । बभ्रू यामेषु शोभते । ऋ० ४/३२/२३

अथर्ववेद के दो स्थलों की परीक्षा-

वेद में कन्या जन्म अवाञ्छित है के पक्ष में अथर्ववेद के प्रायः दो स्थलों का उद्धरण दिया जाता है-

पूर्वपक्ष १. 'स्त्रैषूयम् अन्यत्र दधत् पुमांसम् उ दधदिह' । अथर्व० ६/११/३

अर्थात् स्त्री का जन्म कहीं अन्यत्र हो, इस गर्भ में तो पुरुष-सन्तान ही हो।

समाधान- जिस सूक्त का यह मन्त्र है उसमें कुल तीन मन्त्र हैं । इसका अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि- किसी नारी के केवल कन्याएँ ही उत्पन्न होती थी, उसकी इस समस्या के समाधानार्थ कुछ प्रयोगों का वर्णन इन मन्त्रों में है। तभी यह प्रार्थना की गई है कि यह नारी इन उपायों से इस समय पुत्र का प्रसव करे, जो लोग कन्या की कामना करते हैं उनके यहाँ कन्या हो।

इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि कन्या पैदा होना कोई अपराध है

अथर्ववेद के दो स्थलों की परीक्षा-

पूर्वपक्ष २. ‘ पिङ्ग रक्ष जायमानं पुमांसं स्त्रियं क्रन्’। अथर्व० ८/६/२५

पूर्वपक्षियों के अनुसार इसका अर्थ है कि- हे पति! उत्पन्न होने वाले पुत्र की रक्षा करो, उसे स्त्री न बनाओ।

समाधान- यह मन्त्र गर्भ-रक्षा के प्रकरण का है। यहाँ ‘पिङ्ग’ का अर्थ पति नहीं अपितु ‘औषधि-विशेष’ है। सायणाचार्य के अनुसार यह ‘श्वेत सरसों’ है। पिङ्ग औषधि के प्रयोग से गर्भपिण्ड के भक्षक (आण्डाद) रोगकृमियों को नष्ट किया जा सकता है, यह मन्त्र में वर्णित है।

विवाह-संस्कार

वेदों में विवाह-संस्कार को पवित्र एवं सभी सुखों का कारण बताया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि द्यौ और पृथिवी के विवाह द्वारा ही प्राणियों को समस्त धन-धान्य, बल एवं प्राण आदि प्राप्त हुए हैं –

" ऊर्ज्जं नो द्यौश्च पृथिवी च पिन्वतां पिता माता विश्वविदा सुदंससा"- ऋ० ६/७०/६

- ✓ ऋग्वेद और अथर्ववेद में वैवाहिक सूक्तों (ऋ० १०/८५/९, अथर्व० १४/१/९) का अद्भुत वर्णन है। इन सूक्तों में सोम और (सविता पुत्री) सूर्या के विवाह वर्णन द्वारा मानव के लिए विवाह विषयक निर्देश दिए गए हैं।
- ✓ वेद के अनुसार सोम स्वयं में अपूर्ण है। पूर्णता प्राप्ति के लिए उसे वधु पाने की इच्छा होती है। वस्तुतः सोम चन्द्रमा ही है जो अपने आप में प्रकाशहीन है। सविता सूर्य की सुषुम्ण नामक रश्मि-संहति ही सूर्या है, उससे वह प्रकाशित होता है। इस प्राकृतिक घटना को वेद में सूर्या एवं सोम के विवाह-रूप में वर्णित किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि विवाह न्यूनता को दूर कर पूर्णता लाता है।
- ✓ सौम्य और तैजस गुणों का साहचर्य ही विवाह है। इन्हीं सौम्य और तैजस गुणों को प्रश्नोपनिषद् में क्रमशः रयिः और प्राण कहा गया है।

अतः वेद की दृष्टि में स्त्री का महत्त्व पुरुष से न्यून होने का कोई प्रश्न ही नहीं।

विवाह योग्य आयु-

- वैदिक समाज में विवाह नामक संस्था अत्यन्त सुव्यवस्थित थी। यह सम्बन्ध शारीरिक मात्र नहीं, आध्यात्मिक भी था।
- वैदिक विवाह पद्धति से स्पष्ट है कि उस समय बाल-विवाह समाज में स्वीकृत नहीं था।
- वेद के अनुसार जब लडका और लडकी ब्रह्मचर्याश्रम समाप्त कर युवक और युवति हो जाते हैं, तभी उनका विवाह होना चाहिए-

  "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्"। अथर्व० ११/५/१८

- ऋग्वेद के १०/८५/९ मन्त्र में आए 'पत्येसशन्ती' शब्द की व्याख्या करते हुए सायणाचार्य 'पतिकामा' एवं 'पर्याप्तयौवना' करते हैं।
- इसी प्रकार अन्य मन्त्र में विवाह योग्य स्त्री के लिए 'अशिश्वी- जो बालिका नहीं है' एवं 'नव्याः नव्याः युवतयः भवन्ति' का प्रयोग किया गया है। ऋ० ३/५५/१६

- ऋग्वेद में उषा द्वारा देदीप्यमान सूर्य को प्राप्त किए जाने की उपमा युवा पति को प्राप्त करने वाली युवती से दी गई है

“ कन्येव तन्वा शाशदानाँ एषि देवि देवमियक्षमाणम् ।

संस्मयमाना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती”।। ऋ० १/१२३/१०

- इसी प्रकार अन्य उदाहरण-

“न मर्द्धन्ति युवतयो जनित्रीः” । ऋ० ३//५४/१४

जब युवतियाँ विवाह करके माँ बनती हैं, तब वे किसी को कष्ट नहीं देतीं।

“उत मेऽरपद् युवतिर् ममन्दुषी” । ऋ० ५/६१/९

युवति कन्या ने आनन्दित होकर मेरे सम्मुख स्पष्टतः अपने विवाह का प्रस्ताव किया है ।

“उप यमेति युवतिः सुदक्षम्” । ऋ० ७/१/६

युवति श्रेष्ठ बली युवक को प्राप्त करती है।

स्वयंवर विवाह -

- जिस प्रकार वर को अधिकार है कि वह योग्य कन्या से विवाह करे उसी प्रकार वेदों में कन्या को भी अधिकार दिया गया है कि वह योग्यतम और अपनी रुचि के अनुकूल वर का चुनाव करे-

“कियति योषा मर्यतो वधूयो परिप्रीता पन्यसा वार्येण।

भद्रा वधूर्भवति यत् सुपेशाः, स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् ॥ ऋ० १०/२७/१२

- वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने वेदभाष्य में अनेकत्र स्वयंवर विवाह का वर्णन किया है-

“स्त्री अपने समान पुरुष तथा पुरुष अपने समान स्त्रियों के साथ आपस में प्रसन्न होकर, स्वयंवर विधान से विवाह करके सब कार्यों को सिद्ध करें।”

ऋ० भा० १/२२/११, १/३०/१३, १/१६७/३, ६/६४/६, यजु० भा० ८/९, ३४/१०

विधवा विवाह -

- वैदिक साहित्य के अनुशीलन से विधवा विवाह की प्रथा के उल्लेख प्राप्त होते हैं-
- ऋग्वेद के दशम मण्डल में पति के मृत्यु के पश्चात् विलाप करती स्त्री से कहा गया है कि-

"हे नारी ! मृत पति को छोडकर जीवित संसार में आओ और उसकी पत्नी बनना स्वीकार करो जो तुमसे विवाह करने का इच्छुक है-

"कियति योषा मर्यतो वधूयो परिप्रीता पन्यसा वार्येण ।

भद्रा वधूर्भवति यत् सुपेशाः, स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् ।। ऋ० १०/२७/१२

- महर्षि यास्क- "विधवेव देवरं देवरः तस्माद्द्वितीयो वर उच्यते"। निरुक्त ३/१५

धन्यवादः